

आपको कब पता चलता है कि आप रिटायर हो गए

राजेश कुमार

विकसित देशों में जातीयता, लिंग, विकलांगता, नागरिकता, आदि की तरह ही आयु के आधार पर भी नौकरी आदि देने में भेदभाव करने की मनाही है। इस बात की पुष्टि रिटायर के मूल अर्थ से भी होती है। रिटायर शब्द का मूल फ्रांसीसी भाषा में है जो दो शब्दों से मिलकर बना है 'रि' जिसका अर्थ है 'वापस', और 'टायरर' जिसका अर्थ है 'लौटना'। एक तरह से इसका अर्थ हुआ, वापस लौटना। यानी इसमें खुद की इच्छा या फ़ैसला शामिल है, चाहे उसकी परिस्थितियाँ कुछ भी रही हों। इसके हिंदी समकक्ष 'अवकाश ग्रहण करना' में भी यही भाव है। लेकिन हम अपने स्वर्गादपि गरीयसी देश की बात कर रहे हैं, जिसमें सरकारी कामकाज में यह व्यवस्था है कि एक दिन आपको बता दिया जाता है कि अब आप काम करने के योग्य नहीं रहे, और इस दिन से पहले आपको काम करने से नहीं रोका जाता, भले ही आपको कोई काम आता हो या न आता हो। यानी मूल अर्थ को उलटकर, वापस लौटाना कर दिया गया है; हिंदी में कहें, तो सेवानिवृत्त करना या अवकाश ग्रहण करवाना।

इसलिए रिटायरमेंट या सेवानिवृत्ति की तिथि आपको यह बताने का बहुत अव्यवहारिक तरीका है कि अब आप रिटायर हो गए हैं, और हो सकता है कि आपको यह बात समझ में न आए, या आप इसे समझने में कोई भूल-चूक (जो लेनी-देनी न हो) कर दें, इसलिए हम आपको बताना चाहते हैं कि ऐसे बहुत से तरीके या लक्षण हैं, जिनसे आप पहचान सकते हैं कि अब आप रिटायर हो सके हो चुके हैं।

दरअसल अगर आप सजग हैं, तो यह बात आप को रिटायर होने से पहले ही पता चलने लगती है कि अब आप रिटायर होने वाले हैं। वे मातहत, जो आपके सामने बैठकर मुस्कराकर कहते हैं कि आपसे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है,

आप बहुत अच्छे हैं, आपका व्यवहार बहुत अच्छा है, लेकिन दुख की बात है कि कुछ ही समय में आपका साथ छूट जाने वाला है, आपको इस बात की याद दिलाते हैं। वैसे आपको और उन्हें दोनों पक्षों को भली-भाँति पता है कि वे आपको बिल्कुल पसंद नहीं करते, और चाहते हैं कि आप रिटायर होने से पहले ही रिटायर हो जाएँ; उन्होंने कई बार आपकी शिकायत की है कि आप दफ़्तर में समय पर आने के लिए कहते हैं, या काम करने के लिए कहते हैं, वगैरह-वगैरह। अगर आपके पास किसी के मन में झाँकने की शक्ति हो, तो आप देख सकते हैं कि मन में तो उनके लड्डू फूट रहे होते हैं, भले ही ऊपर से वे दुख के कई-कई लबादे क्यों न ओढ़े हुए हों। ये ठीक उन पड़ोसियों की तरह होते हैं जो वैसे तो आपको दुआ-सलाम नहीं करते और सामने पड़ जाने पर कन्नी काटकर निकल जाते हैं, लेकिन अगर आप पर कोई दुख आ पड़े, तो उस दुख में अपने सुख की तलाश में आपके यहाँ ऊपरी शोक प्रदर्शित करने के लिए आ धमकते हैं।

या फिर आपके वे खैरख्वाह जो बाकी विषयों पर बात करना छोड़कर पूरी संजीदगी से, एकमात्र इस विषय पर बात करने लगते हैं कि आप रिटायर होने के बाद क्या करेंगे। वे आपको बताते हैं कि खाली समय कैसे काटने को तोड़ता है, कैसे अच्छा भला चलता-फिरता आदमी डिप्रेशन (हिंदी में अवसाद) में आता है। और वे सुझाव देते हैं कि कोई बिज़नेस कर लेना या कहीं कोई नौकरी ढूँढ़ लेना, कोई अपना काम शुरू कर देना, वगैरह-वगैरह। और वे उदाहरण देने लगते हैं कि कैसे उनका पड़ोसी रिटायरमेंट के बाद अब हर काम में टोका-टाकी करके पूरा घर सिर पर उठाए रखता है, और पूरे परिवार से झगड़ा ही किए रहता है। या फिर कैसे उनका साला रिटायरमेंट के बाद आँगन में खड़ा होकर सड़क पर हर आते-जाते पर शक करता रहता है कि वह उसे नुक़सान पहुँचाने की योजना बना रहा है। कभी-कभी तो वह इस बात को लेकर उनसे छानबीन भी करने लगता है। या कैसे उनका बहुत प्यारा दोस्त रिटायरमेंट के अगले दिन ही अल्लाह को प्यारा हो गया। वगैरह-वगैरह। ये लोग वास्तव में आपके अजीज़ होते हैं, और आपके भले की सोचते हैं, इसलिए संकोच

के मारे आप इन्हें पलटकर कह भी नहीं सकते कि भाई कि मुझे अभी से क्यों रिटायर किए दे रहे हो!

या फिर वे लोग, जो गाहे-बगाहे आपके ऊपर यह सवाल दागते रहते हैं कि कितने महीने रह गए रिटायर होने में? इनमें से ज़्यादातर लोग खुद रिटायर हो चुके होते हैं, और आपकी तरफ़ इस अंदाज़ से सवाल उछालते हैं कि बेटा, बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगा। उनकी बातों से ऐसा लगता है कि जैसे रिटायरमेंट कोई ऐसी अवांछित मज़िल है, जहाँ तक पहुँचना सबकी मजबूर है। उनकी बातों से बिल्कुल ऐसा कोई संदेश नहीं मिलता है कि रिटायरमेंट तक जितना भी समय बचा है उसमें भरपूर काम किया जाए, महत्वपूर्ण काम किया जाए, बचे हुए काम को पूरा किया जाए, आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन के रूप में योजनाएँ छोड़ी जाएँ। वगैरह-वगैरह।

लेकिन सवाल तो यह है कि जब आप रिटायर हो जाते हैं तो आपको कैसे पता चलता है कि आप रिटायर हो गए हैं? ऐसी बहुत सारी चीज़ें हैं जो आपको बताती हैं कि अब आप रिटायर हो चुके हैं। अब वह पहले वाली बात नहीं रही, जब पसीना गुलाब था। मसलम जैसे कि आपको चाय की इच्छा होती है और घंटी बजाते ही तुरंत चाय का प्याला आपकी मेज़ पर आने के बजाय पत्नी कहती है कि वह हाथ का काम खत्म होने के बाद चाय बनाएगी। या फिर जब आपको लगता है कि भोजन आपके लिए आ रहा है और आप उसे लेने के लिए तैयार हो जाते हैं और यहाँ तक कि अपना हाथ भी बढ़ा देते हैं, लेकिन भोजन की थाली वह बच्चों के पास पहुँच जाती है।

या फिर तब जब आप अखबार पढ़ने के लिए हाथ बढ़ाते हैं, और आपका बेटा पहले ही उसे झटकते हुए कहता है कि आप बाद में पढ़ लीजिएगा, आपको कौन सा जल्दी है, आप तो घर पर ही बैठे हैं।

या फिर आप पत्नी से पूछते हैं कि मेरे कपड़े कहाँ हैं और पत्नी कहती है कि कपड़ों का क्या करना है, अभी आपको कौन सा सजधजकर दफ़्तर जाना है। या तब जब आप अपने कपड़ों की अलमारी खोलते हैं और देखते हैं कि आपके कपड़े वहाँ सदियों से वहाँ लगे हुए हैं, और आपने उन्हें कितने दिनों से नहीं पहना है।

या फिर तब जबकि अपनी घड़ी में अलार्म के फंक्शन की तरफ अब आप ध्यान ही नहीं देते।

या फिर आपको लिखने के लिए एक-दो कागज की ज़रूरत पड़ती है और आपको इसके लिए बाज़ार में जाकर कागज़ खरीदना पड़ता है।

या फिर तब जब आपकी हमेशा आपके सीने से लगी रहने वाली आज के काम नोट करने वाली छोटी डायरी कहीं कोने में गर्द खाती हुई नज़र आती है।

या फिर तब जब आपको पता चलता है कि आप की वेतन पर्ची में तो कोई वज़न ही नहीं रहा।

या फिर तब जब आप अपने उस फ़ोन की तरफ हसरत भरी नज़रों से देखते हैं जिसे लेकर आप परेशान रहा करते थे कि यह हमेशा बजता ही रहता है और अक्सर ही आप फ़ोन करने वाले को कृपया मुझे बाद में कॉल करें या मैं अभी बैठक में हूँ, आपको बाद में कॉल करूँगा - जैसे त्वरित संदेश भेज देते थे और फिर बाद में कॉल करने की बात बड़ी आसानी से भूल जाते थे। वह अब शांति से पड़ा रहता है और आप चाहते हैं कि कोई तो आपको फ़ोन करें। या फिर तब जब आप ऐसे फ़ोन भी अटेंड करने लगते हैं जिसमें कोई आपको बीमा पॉलिसी बेचना चाहता है, आपको अपना नंबर दूसरे सेवा प्रदाता पर पोर्ट करने के लाभ गिनवाने लगता है, या आपको बताना चाहता है कि क्या आपकी फ़ोन मित्र बनने में रुचि है।

या फिर तब जब आप फ़ेसबुक, व्हाट्सएप वगैरह सामाजिक मीडिया पर ऐसे लोगों की पोस्ट का भी जवाब देने लगते हैं जिन्हें आप जानते तक नहीं हैं, जबकि पहले आपको इन साइट पर गए हुए महीनों बीत जाते थे।

या तब जब आपको दावतों, कार्यक्रमों आदि के निमंत्रण आना बंद हो जाते हैं, जबकि पहले आपको क्षमा माँगनी पड़ती थी कि आप व्यस्तता के कारण किसी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नहीं बन सकेंगे।

या फिर तब जब त्यौहार के दिन आप घर पर इंतज़ार करते रहते हैं, लेकिन कोई भी आपके लिए थोड़ी-सी भी मिठाई या उपहार लेकर नहीं आता, जबकि पहले की बात यह थी कि आपका घर ही उपहारों से भर जाता था और आपको सोचना पड़ता था कि उनका करें तो क्या करें।

या फिर तब जबकि आपके पास काम करने के लिए इतने अच्छे-अच्छे विचार आते हैं लेकिन कोई भी उनको लेने के लिए तैयार नहीं होता, जबकि पहले यह स्थिति थी कि कोई शब्द आपके मुँह से निकला नहीं और लोग उस पर अमल करने के लिए टूट-टूट पड़ते थे।

या फिर तब जब कि आपकी पत्नी आपका उपहास उड़ाते हुए कहती है कि घर पर तो आपको अच्छा नहीं लगता होगा, क्योंकि न तो कोई पूछने वाला है, न कोई सलाम करने वाला है, न कोई मिलने के लिए आ रहा है।

या फिर तब जबकि आपको बैंक, बिजली, टेलीफ़ोन आदि के लिए अपना काम करने के लिए लाइन में लगना पड़ता है (और ऐसा भी नहीं होता है कि आप जहाँ खड़े होते हैं लाइन वहीं से शुरू हो जाए), जबकि इससे पहले आपको पता नहीं था कि लाइन क्या होती है। या फिर तब जब आपके घर के फालतू काम आपके जिम्मे आन लगते हैं जैसे दूध लाना, सब्जी लाना, बिजली के बिल का भुगतान करना, वगैरह-वगैरह।

या फिर तब आपकी पत्नी आपको उलाहना देकर कहती है कि कोई भी माई टिक नहीं रही, कहती हैं कि मियाँ घर पर बैठे हैं, इसलिए हम काम नहीं करेंगे। और फिर यह जड़ने से भी नहीं चूकती कि अब भला मैं मियाँ को कहाँ फेंक दूँ।

या फिर तब जब बच्चों के पालने में आपको हाथ बटाना पड़ता है और हालाँकि आपको इसमें खुशी मिलती है लेकिन जब आप बच्चों से पूछते हैं कि बेटा तुम बड़े होकर क्या करोगे तो वे, आपको घर में खाली बैठा देखकर, कहते हैं कि मैं रिटायर होऊँगा।

या फिर तब जब आपको ईमेल वगैरह पर संदेश आने लगते हैं कि रिटायरमेंट के बाद कहाँ निवेश करें और किस तरह से आप अपनी बँधी हुई आमदनी जारी रख सकते हैं। या फिर तब जब आप शेयर बाजार में ज़रूरत से ज्यादा रुचि लेने लगते हैं, जबकि जिंदगी भर आपने इस तरफ देखा भी नहीं होता, और आप इसके बारे में क ख ग तक नहीं जानते।

या फिर तब जब आपको पता होता है कि अखबार के आखरी पृष्ठ के आखरी कॉलम में आखिरी समाचार इस बारे में है कि किस ज़िले में किस डीएम ने किस दवाखाने का उद्घाटन किया है।

या फिर तब जब ऐसे मित्र आपसे दूर भागे लगते हैं जो अभी रिटायर नहीं हुए हैं क्योंकि वे अपने काम में व्यस्त रहते हैं और जानते हैं कि आपसे फ़ोन पर बात करने का मतलब अपना समय खोटी करना है, क्योंकि आपके पास तो अब समय ही समय है।

या फिर तब जब आपके पास सिफ़ारिश के फ़ोन आना बंद हो जाते हैं और आप उन्हें यह कहने से महरूम रह जाते हैं कि भाई चपरासी की डेली वेज़ेज़ नौकरी के लिए भी सीधे मिनिस्टर का फ़ोन आता है, इसलिए मैं आपकी इसमें कोई मदद नहीं कर सकूँगा।

या फिर तब जब आप रीअपॉइंटमेंट के लिए ज़ोर-शोर से कोशिश करने लगते हैं, हालाँकि दिखाते ऐसा हैं कि अब आपको कहीं नौकरी-वौकरी करने की इच्छा नहीं है।

या फिर तब जबकि आपके आपके चेहरे का तेज़ गायब होने लगता है और शरीर की चुस्ती ढीली पड़ने लगती है, क्योंकि आप व्यायाम आदि पर ध्यान नहीं दे पाते। यह वही तेज़ और चुस्ती थी, जिसका आपके साथ काम करने वाले लोग, और खास तौर से महिलाएँ दीवानी थी। या फिर तब जब कि आपके बाल सफ़ेद होने लगते हैं। हालाँकि वे सफ़ेद तो पहले भी थे, लेकिन आप उन्हें तत्परता से रंगकर उनकी सफ़ेदी छिपाए रखते थे।

या फिर तब जबकि आपको लगता है कि लोग आपके बातों का जवाब अब उतनी ही तत्परता से नहीं दे रहे जितना कि पहले देते थे, चाहे उनके व्यवहार में कोई कमी आई हो या नहीं।

या फिर तब जब आप ट्रैक नहीं रख पाते कि आज कौन सा दिन या दिनांक है और इसके लिए आपको आसपास के लोगों या कैलेंडर का सहारा लेना पड़ता है, जबकि पहले के समय में आपका हर मिनट गिना हुआ रहता था।

या फिर तब जब आप को लगता है कि टीवी पर बार-बार वही-वही समाचार क्यों दिखाए जा रहे हैं, या आपको समझ में नहीं आता कि कौन सा प्रोग्राम देखें और आप हताशा में चैनल पर चैनल बदलते चले जाते हैं।

या फिर तब जब आप अपने उन रिश्तेदारों या दोस्तों के यहाँ जाने या उनसे फ़ोन पर बात करने की योजना बनाने लगते हैं जो आपकी प्राथमिकता सूची में कभी नहीं रहे थे।

गरज यह कि ऐसी बहुत सारी चीज़ें हैं जो आपको हमेशा यह बताने के लिए तत्पर रहती हैं कि अब आप रिटायर हो चुके हैं। लेकिन आपकी तरफ़ से सबसे

खुबसूरत और जानदार कदम यह हो सकता है कि आप न तो खुद को न ही दूसरों को पता चलने दें कि आप रिटायर हो गए!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें 
